जो गया श्राद्ध कर आयें उसे फिर पितृ ना सताय

कर्मकाण्ड शास्त्रानुसार मनुष्य तीन प्रकार के ऋण क्रमशः 'देव-ऋण', 'ऋषि-ऋण' एवं पितृ-ऋण' उतारने का दायित्व जन्म-जन्मांन्तरों से करता चला आ रहा है, इन तीनों ऋणों में से पितृ-ऋण' के अंतर्गत मनुष्य को पितरों का श्राद्ध, तर्पण और पिण्डदान करना पड़ता है। किंवदंती है कि इन कर्मकाण्डों को करने के लिये मगध क्षेत्र के 'गया' के जिले में प्रथम समागम भगवान् ब्रह्मा के समय ही हो गया था। हिन्दू शास्त्रों की मान्यतानुसार श्राद्ध, तर्पण एवं पिण्डदान जैसे कर्मकाण्ड वाले देश में 'प्रयाग, 'काशी' और 'गया' जैसी पवित्र त्रिस्थलीयों में करने से पितरों को तृप्ति और संतुष्टि मिलती है। इसमें से 'गया' में किया गया श्राद्ध, तर्पण एवं पिण्डदान सर्वोत्तम माना गया है। महर्षि पराशरजी ने श्राद्ध का उल्लेख करते हुए कहा कि-

'देशे काले व पात्रे च विधिना हषिता च यत्।
तिलैर्दभैंश्र मन्त्रेश्रं स्याच्छ्रद्धया युतम्।।'

अर्थात् देश, काल तथा पात्र में विधि द्वारा जो कर्म, तिल, यव, कुश और मंत्रों द्वारा श्रद्धापूर्वक किया जाये, वही वास्वविक श्राद्ध कहलाता है।

जनश्रुति है कि 'गया' जनपद का नाम 'गयासुर' नामक एक दैत्य के नाम पर पड़ा। गयासुर ने गुरू शुक्राचार्य से विद्या ग्रहण करने के पश्चात् भगवान् विष्णु से अद्भुत वरदान पाने की कामना के लिये उनकी अखण्ड तपस्या की थी जिससे प्रसन्न होकर विष्णुजी ने गयासुर को मनचाहा वरदान दिया:- 'जो भी मनुष्य तुम्हारे दर्शन अथवा तुम्हें स्पर्श मात्र कर लेगा उसे सीधे स्वर्ग की प्राप्ति होगी।' ऐसा होने से 'यमपुरी' में उथल-पुथल मच गई। यमराज के साथ-साथ सभी देवताओं में इसको लेकर चिन्ता होने लगी। अन्ततोगत्वा यमराज के साथ देवताओं ने भी भगवान् विष्णु से अनुनय-विनय की और कहा कि हे प्रभु! आप द्वारा गयासुर को प्रदत्त वरदान से देवलोक में अव्यवस्था फैल गई है, अतः आप इसका शीघ्र ही कोई हल ढूढंने की कृपा करें। देवताओं की अनुनय-विनय सुनकर भगवान् विष्णु ने ब्रह्मा से कहा कि-'तुम गयासुर के प्राणोत्सर्ग के पश्चात् उसके मृत शरीर को पेट के बल लिटाकर उसके सिर को उत्तर एवं पैरों को दक्षिण दिशा में रखकर तथा उसकी पीठ पर बैठकर एक यज्ञ करें।' और विष्णुजी स्वयं गयासुर के पास जाकर उसे प्राणोत्सर्ग के लिये प्रेरित करने लगे। भगवान् विष्णु के आदेश का अक्षरशः पालन करते हुऐ ब्रह्मा एवं अन्य देवगणों ने गयासुर की पीठ पर बैठकर यज्ञ प्रारम्भ किया। ऐसा करने से गयासुर के मृतशरीर के सिर में कंपन होने लगा जिसे देख देवताओं ने मिलकर एक विशाल धर्मशिला उसके सिर पर स्थापित कर दी फिर भी सिर में कंपन होना बंद नहीं हुआ जिससे घबराकर देवताओं ने भगवान् विष्णु से उक्त घटना को बताया। भगवान् विष्णु के बताने पर सभी देवगण उस विस्थापित धर्मशिला पर खड़े हुऐ तभी भगवान विष्णु ने अपनी गदा से उस धर्मशिला पर जोरदार प्रहार करने की योजना बनाई। उक्त योजना का पूर्वानुमान करते हुऐ गयासुर ने विष्णुजी से प्रार्थना की कि हे प्रभु! आप मुझ पर गदा-प्रहार करने से पूर्व एक वरदान और दें कि- 'जिस शिला पर आप प्रहार करेंगे उस पर आपके पैरों के चिन्ह अंकित

हो, सभी देवताओं का इस शिला पर वास रहे और यदि इस शिला पर आकर कोई मनुष्य अपने पितरों का श्राद्ध, पिण्डदान एवं तर्पण करें तो उसके पितरों के साथ उस मनुष्य को भी मृत्योपरांत स्वर्ग की प्राप्ति हो।' अन्ततोगत्वा भगवान् विष्णु ने गयासुर को मनचाहा वरदान प्रदत्त कर घोषणा की कि-'आज से यह पवित्र क्षेत्र तुम्हारे नाम 'गया' से पुकारा जायेगा, यहां पर जो भी मनुष्य श्राद्ध, पिण्डदान व तर्पण करेगा उसके पितरों की प्रेतयोनि और नरकलोक से मुक्ति होकर सीधे स्वर्गलोक की प्राप्ति होगी और साथ ही साथ ये कर्मकाण्ड करने वाले को भी मरणोपरांत स्वर्ग की प्राप्ति होगी।' इतना कहने के साथ-साथ भगवान् विष्णु द्वारा उस शिला पर एक जोरदार गदा प्रहार किया गया।

विष्णुजी द्वारा गयासुर को प्रदत्त उसी वरदान के प्रभाव से आज तक गया क्षेत्र में दाह-संस्कार, श्राद्ध, पिण्डदान व तर्पण आदि कर्मकाण्डों को करने की एक पौराणिक महत्ता के फलस्वरूप मनुष्य तो मनुष्य स्वयं भगवान् के मानवरूपी अवतारों-धर्मराज युधिष्ठर, भीष्म पितामह, बलराम, श्रीकृष्ण एवं श्रीराम द्वारा भी इसी 'गया' में अपने-अपने पितरों का पिण्डदान किया गया है। श्राद्ध संबंधी कर्मकाण्ड अश्विन मास के कृष्ण पक्ष में किये जाते हैं। महर्षि जाबालि के अनुसार पितृपक्ष में श्राद्ध करने से पुत्र, आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य तथा अभिलाषित वस्तु की प्राप्ति होती है जो लोग आश्विन मास में अपने पितरों का श्राद्ध नहीं करते हैं उन्हें पितरगण श्राप देते हैं। श्राद्ध कर्मकाण्ड को संपन्न करने के लिये सर्वप्रथम तर्पण करते हैं। जिसको विधिपूर्वक कराने में एक सुयोग्य पंडे को कम से कम छः घण्टे का समय लगता है। तर्पण चार भागों में संपन्न होता है-देवतर्पण (इसमें देवों के पूजन किये जाते हैं), ऋषितर्पण (इसमें दस ऋषियों का पूजन होता है), यमतर्पण (यम व चित्रगुप्त की पूजा होती है), पितृतर्पण (इससे पितरों का पूजन करना पड़ता है)। यदि किसी मनुष्य की अकाल मृत्यु हो जाये तो उसके लिये गया में विशेष तर्पण कराने का देव-प्रावधान होता है। तर्पण के बाद पिण्डदान अगले दिन से कई स्थानों पर करते हैं। पिंडदान 'गयासिर-स्थल' से शुरू करते हैं तत्पश्चात् 'रामशिला' पर यम व उनके दोनों कुत्तों का पिण्डदान करके पिंडदान करने वाले को 'उत्तरमानसरोवर' में स्नान करना पड़ता है फिर उसे 'प्रेतशिला' पर जाकर प्रेतों का पिण्डदान करके 'ब्रह्मकुण्ड' में स्नान करना पड़ता है सबसे अंत में 'काकबलि' एवं 'अक्षयवट' में पिण्डदान किया जाता है। गया में पितरों के श्राद्ध के साथ-साथ तत्काल ही स्वयं का भी श्राद्ध विशिष्ट प्रावधानों से कराया जाता है। उक्त कर्मकाण्ड को करते समय सुनिश्चित फल की कामना हेतु सादा जीवन जीना, सात्विक भोजन करना, मन के शुद्धिकरण के साथ भूमिशयन, पृथ्वी पर रहने सभी जीव-जन्तुओं की भलाई के विषय में सोचना, झूठ न बोलना और ब्रह्मचर्य का पालन करने जैसे कठिन व्रत का पालन करना पड़ता है।

जब कभी कोई पिण्डदान के उद्देश्य से गया जायें तो उसको पुरातत्व एवं धर्म संस्कृति से संबंधित वहाँ के प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों को 'श्रीविष्णुपद मंदिर, श्रीमंगलगौरी मंदिर, अक्षयवट, रामशिला, प्रेतशिला, ब्रह्मयोनि, फाल्गू नदी एवं बोध गया' इत्यादि को अवश्य देखना चाहिये।

संकलित।

♦♦♦

कर्ज मुक्ति पैकेट

- क्या आप ऋण के बोझ से अभिशप्त हैं?
- क्या संतान की उच्च शिक्षा के लिये लिया गया ऋण चुकाने में असमर्थ हैं?
- क्या बिटिया के घर संसार को संवारने के लिये लिया ऋण आपके जीवन को बेरंग कर रहा है?
- क्या विश्व मंदी के इस दौर की त्रासदी के आप भी शिकार हैं?
- क्या फैंसी लोन आपके गले की फांस बन गया है?

यदि आपका जवाब हाँ है तो आज ही अभी जानें इसके निवारण के प्रयासों(उपाय) के बारे में

बेकारी, बेरोजगारी, साधनहीनता आदि कारण बन जाते हैं व्यक्ति के अर्थोपार्जन में असमर्थता के, तब विवश होकर व्यक्ति ऋण के जाल में पांव डाल देता है। बस फिर वो इस भंवरजाल में फंसता चला जाता है। समय पर ऋण ना चुका पाने की शर्मिंदगी इतनी गहरी होती है कि व्यक्ति घर, परिवार, दोस्तों से आंख मिलाने से भी कतराता है। शारीरिक रोग तो फिर भी मरने के बाद पीछा छोड़ देते हैं, लेकिन ऋण का रोग तो पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। आप नहीं चुका पाये तो आपकी संतान को चुकाना पड़ता है।

पैकेट न्यौछावर मात्र 2500 रू.

यदि आप ऋण के बोझ से छुटकारा पाना चाहते है, तो यह है आपके लिये एक सुनहरा अवसर। आज ही 'ऋणहर्ता गणपति पैकेट के लिये ऑर्डर करें और इस साधना को सम्पन्न करें। इस साधना पैकेट में आप निम्न वस्तुएं प्राप्त करेंगें और साथ ही आपको साधना विधि भी भेजी जायेगी।

1) ऋणहर्ता गणपति यंत्र
2) ऋणमोचन लक्ष्मी-गणेश पिरामिड
3) ऋणहर्ता विजय गणपति प्रतिमा
4) ऋणमोचन सहायक मूंगे की माला
5) विजय गणपति प्रतिमा लॉकेट (मूंगे में)

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-

आप सीधे ही 'त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र' के बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं। आपकी सुविधा के लिये बैंक एकाउन्ट नम्बर इस प्रकार हैं
HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331
(All Amount Payble at Jodhpur Account)

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र
'त्रिनेत्र भवन' प्लॉट नम्बर-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)
फोन: 0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्स: 0291-2618625
E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org